ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 01
January 2016

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/

# भक्तिकाल और भारतीय मानस

नवीन
स्नातकोत्तर विभाग, किरोड़ीमज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
E-mail: naveenravit0007@gmail.com

**शोध संक्षेप–**

हिंदी साहित्य में भक्तिकाल वैचारिक समग्रता का काल रहा है भक्तिकाल की इसी सम्पन्न वैचारिक दृष्टि का प्रभाव आधुनिक हिंदी रचनाओं पर भी देखने को मिलता है। ठीक इसी तरह मध्यकालीन भारतीय जनमानस पर भी भक्तिकाल का रससिक्ट प्रभाव था जो की पीढ़ी दर पीढ़ी आज भी बना हुआ है। भक्तिकाल के स्वरूप, भक्तिकाल की दूरदृष्टि अनुरूप आम भारतीय मानस पर उसके प्रभाव की शोधपूर्वक पड़ताल की जा सकती है।

**प्रस्तावना–**

मानव स्वभावत भक्ति की आस्था से गतिमान उर्जा अपने अस्तित्व के समय से ही धारण करता रहा है। और यही भक्ति का भाव ही मानव के विकास एवं विस्तार से भी जुड़ता है। भारतीय मानस की भक्ति की गहराई का पवित्र लौहस्तंभ भक्तिकाल है जो ऐतिहासिक रूप से पूर्व मध्यकाल के अंतर्गत आता है। वही भक्तिकाल जिसमें कबीर ने वैयक्तिक भेदों से ऊपर उठकर मानव आत्मसंस्कार को जगाया। जिसमें जायसी ने हिंदु प्रेम कथाओं के वर्णन से हिंदु–मुस्लिम एकता का मार्ग प्रशस्त किया।

वही भक्तिकाल जिसमें तुलसी ने मानव में लोक की स्थापना की और लोकमंगल की भावना को भारतीय मानस में स्थापित किया। जिसमें सूर ने कृष्ण वात्सल्य से मानव के स्वाभाविक आनंदवाद को अभिव्यक्ति दी। डॉ. कुंवर पाल के अनुसार 'भक्तिकाल के रचनाकारों ने धर्म का संकीर्ण रूप प्रस्तुत नहीं किया है। सभी कवि धर्म

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 01
January 2016

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/

और जाति की संकीर्णता को त्यागने और परस्पर प्रेम और सहयोग को दृढ़ करने पर बल देते हैं। वे एक ऐसी सर्वमान्य नैतिकता के विकास पर बल देते हैं जिसका आधार किसी प्रकार की संकीर्णता न हो, अपितु जिसकी केंद्रीय दृष्टि परस्पर सहयोग, सद्भावना, प्रेम, सहृदयता, सादगी के आधार पर विकसित हुए हों।'[1]

समग्र रूप में, भक्तिकाल ने सामान्य मानव को उदात्तता का एहसास कराया। भक्तिकाल को ही भक्ति भावना ने भारतीय जनमानस में नया साहस, नए संस्कार, नवीन स्पंदित आनंद की स्थापना की। सर्वप्रथम कबीर ने नाथों, वैष्णवों, इस्लाम के समन्वय से ज्ञानमार्ग का प्रचलन किया। जिसमें भक्ति के केंद्र में ज्ञान था। कबीर ने अपनी साखी, पदों के माध्यम से सीधे–सीधे सामंती समाज को चुनौती दी। कबीर ने भक्ति को रूप, जाति, धर्म से परे कर केवल मानव को आधार बनाकर विकसित किया।

इस तरह भारतीय जनमानस को जाति और धार्मिक बंधनों से मुक्ति का आभास कराने वाले संत कबीर ही थे। जिन्होंने बाहरी जड़ताओं पर ही नहीं, बल्कि वैयक्तिक विकारों पर भी अपनी शैली अनुरूप अपनी बातें कही।

सामाजिक–धार्मिक जड़ता के संबंध में कहा–

'काशी काबा एक है एक है राम रहीम/मैदा एक पकवान बहु, बैठ कबीरा जीम।।'

कबीर के ज्ञानमार्ग ने भारतीय मानस को कट्टरता और सामंती व्यवस्था से ऊपर मानवता को जगह दी। यही कारण है कि आज के भी आधुनिक मानव में कभी–कभी कबीर स्वरूप उभर आता है।

सूफी काव्य परम्परा के प्रमुख कवि जायसी को विजयदेवनारायण साही के शब्दों अनुसार सूफी से पहले एक कवि के रूप में पढ़ा जा सकता है, उनके सूफी होने कारण उनके कवि व्यक्तित्व को सीमित कर देना न्यायोचित नहीं ठहरता। जायसी ने हिंदु मानस की प्रेम कथाओं के माध्यम से लोकतत्व की जो सिद्धि की है वो सर्व समाज के लिए एक नयी बात थी। जायसी को भक्ति का आधार है–प्रेम। जायसी ने अपनी रचनाओं में प्रेम को भक्ति के पयार्य स्वरूप रचा है। जायसी ने भारतीय जनमानस के

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 01
January 2016

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/

बीच प्रसिद्ध लोक कथाओं को प्रेम के गहरे सांचे में ढालकर रचा। जिससे भारतीय जनमानस में प्रेम की स्थापना संभव हो सकी। आज भी तमाम बंदिशों के पश्चात प्रेम उन्मुक्त भारतीय सभी मूल्यों सहित प्रेम से ही गतिशील पौरूष है। प्रेम की कठिनता, प्रेम के वियोग का महत्व, प्रेम में स्वीकार्यता, प्रेम की करूणा के साथ–साथ प्रेम के प्रारम्भिक आकर्षण का वर्णन जायसी के 'पद्भावत' में है। ये प्रेम वर्णन ऊपर से जितना काल्पनिक, घटना प्रदान है अंदर से उतना ही अधिक ग्राह्य। जायसी वर्णित प्रेम परमात्मा से मिलन का हेतु है। जायसी ने समासोक्ति के रूप में रचनात्मक सौंदर्यबोध का अद्भुत समा बांधा है। एक तरह से जायसी के प्रेम में लोकतत्व के जो दृश्य है वो भारतीय मानस की चेतना से इनकी संबद्धता के सूचक हैं। कहा जा सकता है कि जायसी ने भारतीय जनमानस के हृदय को ही साधा है।

तुलसीदास रामकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि थे। उनके समष्टि दृष्टिकोण के आधार पर उन्हें संपूर्ण भक्तिकाल का प्रतिनिधि कवि कहा जा सकता है। तुलसीदास हिंदी के जातीय कवि थे। उनकी जातीयता का केंद्र थी समग्र भारतीय जाति। डॉ. कुवंर पाल सिंह अनुसार 'तुलसी को कुछ संकीर्ण लोगों ने पुराणपंथी सिद्ध करने का प्रयास किया है वहीं तुलसी जाति पाति धार्मिक और सामाजिक संकीर्णता के प्रति आक्रोश प्रकट करते हैं 'धूत कहो अधूत कहो।'[2]

सबसे पहले तुलसी ने ज्ञानमार्ग की निर्गुण और सगुण के भेद को अस्वीकार कर, दोनों को ही समान माना। तुलसीदास जी की समन्वय भावना का इसे प्रथम बिंदु माना जा सकता है। उनके महाकाव्य 'रामचरितमानस' में राम चरित के दो ही बड़े लक्ष्य हैं– लोकमंगल की स्थापना और समन्वयक व्यवहार की सिद्धि। तुलसी की लोकमंगल भावना आज भी भारतीय जनमानस का प्राथमिक भाव है। यही वो मूल्य है जो सर्वाधिक आकृष्ट करने वाला है। भारतीय मानस के प्रत्येक चरित में ये भावना किसी न किसी अनुपात में अवश्य है।

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 01
January 2016

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/

वहीं समन्वय की व्यावहारिक भावना भी भारतीय जन की विशेषता है जिसकी तुलना बुद्ध के मध्यम मार्ग से की जा सकती है। इस समन्वय बोध का संबंध तुलसी के भावात्मक मूल्यबोध और रचनात्मक सौंदर्यबोध से है। यही कारण है कि तुलसी केवल पंडितों की वाक् चेतना तक सीमित न रहकर, सामान्य मानस की आंतरिक चेतना का आधार हो गए हैं। 'रामचरितमानस' के उतरकांड में व्यावहारिक मर्यादा, कर्मसिद्धि के लक्ष्य को लेकर जो भी लिखा गया है वह भारतीय मानस का आदर्श है। इस तरह रामकाव्यधारा की लोकमंगल प्रेरणा, समन्वयक चेतना, मर्यादा की भावना भारतीय मानस में व्याप्त है जो उसके व्यवहार में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में समय–समय पर प्रकाशित हो ही जाती है। भक्तिकाल के लोकनायक कवि तुलसीदास का भारतीय जनमानस से गहरा साम्य है और ये साम्य ही 'रामचरितमानस' की प्रासंगिकता का समकालीन आधार है।

सच्चे अर्थों में तुलसी मानस के सबसे सरल, सुलभ और आदर्शो लक्ष्य हैं। भक्तिकाल की कृष्णकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि सूरदास है। जिनकी भावना और रचनात्मकता दोनों ही अपने युगीन कवियों में उच्चकोटि की है। सूरदास ने 'श्रीमद्भागवत के आधर पर 'सूरसागर' की रचना की। इसमें उन्होंने बालकृष्ण के वात्सल्य स्पर्श के साथ–साथ 'भ्रमरगीत' के माध्यम से प्रेम–ज्ञान के द्वंद्व को बड़े ही हर्ष और आनंद स्वरूप रचा है। इसी वर्णन को आधार बनाकर शुक्ल जी ने इस काव्य का 'जीवनोत्सव' प्रेरित करने वाला कहा। सूर का वात्सल्य बाहरी संसार के थके पुरूष में शक्ति संचार का स्त्रोत है जो जीवनोत्सव का सच्चा अनुभव कराता है। भारतीय मानस में वात्सल्य रस जीवन की नवीनता का रस है। जो उसे जटिल से जटिल परिस्थितियों में बिखरने नहीं देता।

भ्रमरगीत को बेशक निर्गुणपर सगुण की लाक्षणिकता के रूप में ग्रहण किया जाता है लेकिन अभिद्येय अर्थ में ये प्रेम की ज्ञान पर जीत से संबद्ध है। भारतीय मानस में प्रेम–ज्ञान से कहीं अधिक महत्व रखता है। सूर भी दर्शाना चाहते थे कि भारतीय

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 01
January 2016

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/

मानस प्रेम के आगे ज्ञान को बड़ा न समझे। क्योंकि प्रेम का संबंध सच्चे आत्मिक स्वभाव से है वहीं ज्ञान का संबंध बौद्धिक रहस्मयी है। सूर ने अपने वात्सल्य और प्रेम के रूचिसम्पन्न वर्णन से समस्त भारतीय जमात पर प्रभाव स्थापित किया है। रामस्वरूप चतुर्वेदी जी स्वीकार करते हैं कि 'जीवन के प्रति अनुराग जगाना परिवार के भावात्मक आकर्षकों का उद्घाटन करके ही संभव था और यही सूरदास ने किया है।[3]

निष्कर्षतः कबीर, तुलसी, जायसी, सूरदास की भक्तिभावना, उनके सृजनात्मक संस्कार भारतीय जनमानस में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में मौजूद हैं जो भारतीय मानस के जीवन में प्रवहमान हैं। और समय–समय पर स्वाभाविक रूप से प्रकाशित हो जाते हैं तभी इस समस्त भक्तिकाल को प्रथम जागरण की संज्ञा दी गई। हम भक्तिकाल की चार काव्यधाराओं के चारों प्रतिनिधि कवियों को भारतीय मानस के संदर्भ में एक साधारणीकरण से प्रभाव ग्रहण कर सकते है। क्योंकि इनमें शब्द भेद, कथा भेद और भाषा भेद बेशक है। लेकिन मानव और समाज के लक्ष्यों में अटूट साम्य दिखता है, जो भावनात्मक और व्यावहारिक दोनों स्तर पर व्याप्त है।

भक्तिकाल और भारतीय मानस का संबंध बादल और जमीन सा है जिससे दोनों ही तृप्त हुए हैं। भक्तिकाल के दर्शन रूपी बादलों ने बरस कर बंजर पड़े भारतीयों को उर्वरता प्रदान की। डा. शिवकुमार मिश्र के शब्दों में 'अपने युग और अपने समय के बीच जो कुछ किया वह युगांतकारी ही माना जाएगा। उनकी अपनी सीमाएं, रचनात्मक और विचारधारात्मक, अपनी जगह पर हैं, उनका प्रदेय भारतीय सांस्कृतिक जीवन के इतिहास में कभी न भुलाई जा सकने वाली एक हकीकत है इसे हमें स्वीकार करना होगा।' |4।

## संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. भक्ति आंदोलन और लोक संस्कृति, डॉ. कुंवरपाल सिंह, पृ. 37
2. भक्ति आंदोलन की सार्थकता, डॉ. कुंवरपाल सिंह, पृ. 36
3. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृ. 45

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 01
January 2016

4. भक्ति आंदोलन और भक्तिकाव्य, डा. शिवकुमार मिश्र, पृ. 26